International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
Online ISSN: 2582-3493
Received: 02-10-2019; Accepted: 04-11-2019; Published: 12-12-2019
Volume 1; Issue 2; 2019; Page No. 20-21

भारतीय दृष्टि में नारी

प्रीति विजय
संस्कृत विभाग, राजस्थान विष्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''[1] न गृहं गृहमित्यादुर्गृहिणी गृहमुच्यते'', ''यो भर्तासा स्मृतांगना।''[2] इत्यादि सुभाषित वाक्य भारतीय समाज में नारी के प्रति केवल शाब्दिक सद्भावना का प्रदर्शन मात्र नहीं वरन् भारतीय गृहस्थ जीवन में पग–पग पर इसकी व्यावहारिक सार्थकता सिद्ध है। आर्यावर्त प्राचीनकाल से ही 'मातृ देवो भव' 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' इत्यादि सूक्तियों का समुद्घोषक रहा है। शास्त्रों में भी नारी शक्ति का महान गौरव दृष्टिगोचर होता है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और आदर्शभूत संस्कृति है। ऐसी संस्कृति विश्व में अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देती है। यहां नारी का महत्त्व अत्यधिक है। पिता की अपेक्षा माता गौरव सर्वत्र लिखित है, कहा है – ''पितुर्दश गुणा माता गौरवेणातिरिच्यते'' इत्यादि वचनों के अनुसार नारी का महत्त्व अनादिकाल से ही प्रतिष्ठित है। नारी अपनी सृजनशीलता और कलात्मक प्रवृत्तियों से नर की सृष्टि को पूर्णता प्रदान करती आ रही है। 'नारी' शब्द नृ अथवा नर शब्द से बना है नृ+अच्+ङीन = नारी। महाभाष्य में पतंजलि ने कहा है ''नृर्धम्यान्नरी'', 'नरस्यापि नारी' इति। स्त्री, रमणी, प्रमदा, तरूणी, वामा, सुन्दरी, ललना, दारा, जननी, माता, दुहिता, बाला, सुता, कन्या, वधू, शक्ति इत्यादि नारी के पर्यायवाची हैं जो उनके वैशिष्ट्य को द्योतित करते हैं।

भारतीय ऋतम्भरा मनीषा परा शक्ति को द्वैत अथवा अद्वैत किसी भी रूप में मानें, किन्तु भौतिक सृष्टि के परिप्रेक्ष्य में इस द्वैत–अद्वैत शक्ति का समन्वय सापेक्ष है। नर–नारी एक पूर्ण के दो अंश हैं, अतः जब तक दोनों का समन्वय संयोग नहीं होता, तब तक सृष्टि का विस्तार असंभव है। इसमें नर की पूरयित्री नारी है जिसे जाया की संज्ञा दी गई है।

''यावन्न विन्दते जायां तावदर्धो भवेत् पुमान्।'' [3]

नारी का माहात्म्य स्वयं उसके लिये प्रसंगानुकूल समय–समय पर दी गई संज्ञायें प्रतिपादित करती है। एक ओर जहां कान्ता, ललना, रमणी आदि नाम उसके रमणीय स्वरूप का बोध करवाते हैं, वहीं दूसरी ओर नारी, जाया, स्त्री आदि संज्ञाएं उसके गुण, धर्म, कर्म एवं महत्त्व को प्रदर्शित करती हैं। नारी के लिये स्त्री शब्द जितना अधिक व्यापक है उतना ही अधिक प्रचलित भी है।

स्त्री शब्द ''स्त्यै'' धातु से बनता है ''स्त्यै'' धातु का अर्थ लज्जा से सिकुड़ना है। स्त्री का स्त्रीत्व उसके लज्जाशील होने में ही है। वे लजाती हैं, इसीलिये स्त्री है।

स्त्रियों का पूजन देवताओं के समाराधन का मुख्यसाधन है। नारी भारतीय संस्कृति में अतीव उन्नत, गौरव की अधिकारिणी से ही है। स्त्रीत्व के नाते उसमें स्वभाववशात् अनेक प्रकार की दुर्बलताएं स्वतः विद्यमान रहती है। इसीलिये तो भारतीय समाजशास्त्रियों ने ''न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति'' का शंखनाद किया है। यह कथन स्त्री समाज की निन्दा या अपमान का सूचक नहीं, प्रत्युत वस्तुस्थिति का द्योतक है।

वैदिक वाङ्मय के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारत वर्ष में समाज में नारियों को बहुत गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। प्राचीन समय में स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा की सुन्दर व्यवस्था थी तथा सामाजिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। वे अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त युद्धों तक में जाती थी और अपनी वीरता की अमिट छाप छोड़ती थी। नारी को ब्रह्मा व सरस्वती कहा है।

भारतीय नारी कन्या व पत्नी के रूप में

नारी त्याग और तपस्या की जाज्वल्यमान विभूति है। इन्हीं दोनों तत्वों के समन्वय से ही हमारी आर्या नारी का स्वरूप संगठित हुआ है। नारी जीवन का मूल मंत्र ''त्याग'' है और उसे सुदृढ़ता का आधार ''तपस्या'' ने दिया है।

कन्या रूप, भार्या रूप तथा मातृ रूप ये त्रिविध रूप नारी के दृष्टिगत होते हैं। कौमार काल नारी जीवन का साधनावस्था है तथा उत्तर काल उस जीवन की सिद्धावस्था है।

कन्या रूप में नारी का चित्रण हमें सुप्रसिद्ध कवि कालिदास की रचनाओं में प्राप्त होता है। कालिदास आर्य संस्कृति के प्रतिनिधि कवि हैं, उन्होंने आर्य कन्या के आदर्श को ''पार्वती'' के रूप में अभिव्यक्त किया है। कालिदास ने ''कुमारसम्भवम्'' महाकाव्य में 'तपस्या' के महत्व को कड़े ही भव्य शब्दों में प्रकट किया है। कालिदास का कथन है –

इयेष सा कर्तुमबन्ध्यरूपतमं समाधिमास्थाय तपोभिरात्मन
अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्चतादृशः।। [4]

नारी का गार्हस्थ्य जीवन –

भारतीय संस्कृति में नारी दो कुलों की मर्यादा की रक्षा करती है। एक घर में नारी का पालन–पोषण होता है तथा दूसरे घर की वह गृहस्वामिनी बनती है। नारी का गार्हस्थ जीवन भगवत्प्राप्ति का एक सोपान मात्र है। भगवान् की प्राप्ति अनुराग से सुलभ है, भक्ति ही स प्रियतम के पाने के लिये एक सुगमाराजमार्ग है। गार्हस्थ जीवन प्रेम में, सुख, दुःख में, अद्वैत अर्थात् एकाकार तथा समस्त अवस्थाओं में अनुकूल रहना नारी के द्वारा ही संभव है।

नारी की विविध रूपों में वन्दना की गई है –

''नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

मानव जगत् का प्रायः आधा भाग नारी जाति का है। नारी माता के तौर से संतान को उत्पन्न करती है, उसका पालन पोषण करती है तथा उसके प्रति जीवन भर अपार एवं निःस्वार्थ प्रेम धारण करती है। गृहिणी के रूप से नारी पुरुष की सखी है, मंत्री है और उसके घर की व्यवस्था

करती है तथा धर्म का साधन करती है। वह प्रेम, दया, त्याग, परिश्रम की प्रतिमा है।
नारी को भारतीय संस्कृति में जननी के रूप में अधिक महिमाशाली कहा गया है।
प्रतिदिन मनुष्य अपने पापों के विनाश के लिये पंच नारियों का स्मरण करते हैं।

''अहिल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पंचकम् नाम स्मरेत् नित्यम् महापातक नाशनम्।।''

भगवान शिव भी बिना नारी के अपने स्वरूप से आधे ही रह जाते हैं और पूरे रूप से ''अर्धनारीश्वर'' कहलाते हैं। नारी सदा से ही गौरवान्वित, सम्माननीय, पूजनीय, आदरणीय है और जन्मजन्मान्तर काल तक रहेगी।

संदर्भ सूची

1. मनुस्मृति, 3.56.8
2. महाभाष्य (4.4.9)
3. व्यास संहिता, 2/14
4. कुमारसम्भवम्, 5/2